प्रकृति का मोहक नाद

डॉ. अर्पिता अग्रवाल,
'काकली भवन' 120 –बी/2, साकेत,
मेरठ– 250 003, (उत्तर प्रदेश)

वर्ष 2023 के जून माह में हमने केरल में कोच्चि, कलाड़ी, थेकड़ी, कुमारकोम भ्रमण की योजना बनाई। पौराणिक उद्धरणों के अनुसार केरल, कन्याकुमारी व रामेश्वरम की संस्थापना भगवान परशुराम ने ही की थी। इसी कारण केरल को देवभूमि भी कहा जाता है। अरब सागर के निकट स्थित केरल का तटीय क्षेत्र लगभग 600 किलोमीटर लंबा है। केरल में आज भी पुरोहित वर्ग उक्त समूचे क्षेत्र को परशुराम की भूमि की मान्यता देता है। भगवान परशुराम शस्त्र विद्या के श्रेष्ठ जानकार थे। परशुराम केरल के मार्शल आर्ट कलरीपायट्टु की उत्तरी शैली वदक्कन कलरी के संस्थापक आचार्य एवं आदि गुरु हैं। वदक्कन कलरी अस्त्र–शस्त्रों की प्रमुखता वाली शैली है।

हमारी यात्रा का आरंभ 11 जून को सुबह 5:00 बजे दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पर एयर एशिया की उड़ान से हुआ। ठीक 3 घंटे बाद हम कोच्चि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे। वर्ष 1999 में कोच्ची अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन हुआ था। कोच्चि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भारत का एकमात्र ऐसा हवाई अड्डा है जो पूरी तरह सौर ऊर्जा से संचालित है। यहां हवाई अड्डे को जाने के मार्ग में हमने असंख्य सौर पैनल देखे। इससे पहले कोच्चि में, नौसेना बेस के पास एक छोटा हवाई अड्डा था। जहां कम विमानों के उतरने की सुविधा उपलब्ध थी। अब उस हवाई अड्डे पर सिर्फ अति विशिष्ट लोगों के हवाई जहाज उतरते हैं।

केरल में हमारे चार दिन के ट्रिप में हम पहले दिन यानी 11 जून को कोच्चि हवाई अड्डे पर उतरकर टैक्सी द्वारा कलाड़ी गांव के लिए चल दिए। यह कोच्चि हवाई अड्डे से 7 किलोमीटर दूर है। रास्ते में हर घर में हरियाली, पेड़–पौधे, ऊंचे–ऊंचे नारियल के वृक्ष लगे हुए थे। ऐसा लगता था मानों प्रकृति ने ही हर घर को सजा दिया है। कलाड़ी की यात्रा ने भीतर तक शांति का अनुभव करा दिया। कलाड़ी का अर्थ है, 'पदचिन्ह' (फुटप्रिंट्स)। महा मानव, महान सन्यासी, महान दार्शनिक व आध्यात्मिक गुरु आदि शंकराचार्य जी का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब भारत विभिन्न सम्प्रदायों में बंटा था और उनका आपस में संघर्ष चलता रहता था। बौद्ध धर्म तंत्र–मंत्र के प्रभाव में था। आदि गुरु शंकराचार्य ने पूरे भारत की कई बार पैदल यात्रा की और अलग–अलग धर्म व संप्रदाय के विद्वानों से शास्त्रार्थ कर उन्हें परास्त किया। आदि शंकराचार्य जी को शिवांश कहा जाता है। उन्होंने अद्वैत मत का प्रतिपादन किया और विश्व में सनातन धर्म की पताका लहराई।

कलाड़ी में हमने आदि शंकराचार्य स्तूप और आदि शंकराचार्य जी की जन्मस्थली के दर्शन किए। शंकराचार्य स्तूप में 8 मंजिल हैं और स्तूप की सीढ़ियों के साथ लगी दीवार पर 25 कलाकृतियों द्वारा आदिशंकराचार्य जी के जीवन की घटनाओं का सजीव वर्णन है। शंकराचार्य स्तूप से कुछ दूरी पर ही वह स्थान है जहां आदिशंकराचार्य जी का जन्म स्थल है। लेकिन सदियों तक उनकी जन्मभूमि से लोग अनभिज्ञ रहे। लगभग 150 वर्ष पहले 33 वें शंकराचार्य जी ने, प्रथम आदि शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित प्रथम मठ (श्रृंगेरी मठ) जो कर्नाटक में तुंगा नदी के किनारे है, का पता लगाने के लिए प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन कर बहुत परिश्रम से उस स्थान को चिन्हित किया और उसे भव्य रुप प्रदान किया। यह स्थल पेरियार नदी के किनारे स्थित है। यहीं पर आदिशंकराचार्य जी की मां आर्यम्बा की समाधि है। आदि शंकराचार्य जी की जन्म स्थली के विशाल परिसर में आदि शंकराचार्य की प्रतिमा स्थापित है। यहां नौ देवियों की प्रतिमाएं हैं व मां शारदा की विशाल प्रतिमा भी स्थित है। यहां पर ही 'क्रोकोडाइल घाट' है जहां शंकराचार्य जी का पांव

मगरमच्छ ने पकड़ा था और तब मां ने उन्हें संन्यास लेने की आज्ञा दी थी क्योंकि इससे पहले अनेक बार आग्रह करने के बाद भी मां आर्यम्बा ने शंकराचार्य को संन्यास लेने की आज्ञा नहीं दी थी। इसी परिसर में पास में एक कृष्ण मंदिर है जहां अनेक छोटे–छोटे पालने टंगे हुए हुए हैं। वहां माता–पिता अपने बच्चों के स्वास्थ्य व दीर्घायु के लिए छोटे–छोटे पालने टांगते हैं। कहते हैं जब पेरियार नदी ने अपनी जल धारा का मार्ग परिवर्तित किया था, तब यह मंदिर इस स्थान पर स्थानांतरित किया गया था, क्योंकि पुराना मंदिर नदी की धारा में समा गया था। कथा इस प्रकार है कि पहले पेरियार नदी कुछ दूरी पर बहती थी लेकिन वृद्ध हो जाने पर मां आर्यम्बा को प्रतिदिन स्नान करने दूर जाने में कष्ट होता था। अतः बालक शंकर ने प्रार्थना कर नदी की धारा का मार्ग परिवर्तित कर दिया था और नदी मां आर्यम्बा के घर के पास से प्रवाहित होने लगी थी।

आदि शंकराचार्य जी ने 32 वर्ष की आयु में केदारनाथ में समाधि ले ली थी। आदि शंकराचार्य जी की समाधि स्थल को वर्ष 2013 की उत्तराखंड आपदा में बहुत अधिक नुकसान हुआ था। वर्ष 2020 में इसका पुनर्निर्माण आरंभ किया गया। 5 नवंबर वर्ष 2021 को एक ही शिला को काटकर बनाई गयी आदि शंकराचार्य जी की 12 फुट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया गया था।

दिन के 10:00 बजे रहे थे और हम कलाड़ी से थेकड़ी के लिए चल पड़े। वृक्षों से आच्छादित कलाड़ी से थेकड़ी का पूरा मार्ग अत्यंत सुंदर था। मानो जंगल के बीच में से ही बहुत ही सुंदर सड़क बना दी गई हो। मार्ग में ऊंचे–ऊंचे काली चट्टानों से बने पहाड़, नीचे घाटियों में बहती नदियों का शोर, सड़क के किनारे कटहल, कोको, आम इत्यादि फलों के पेड़ तथा सुंदर फूलों वाले वृक्ष लगे हुए थे। बस कार से उतरो और हाथ बढ़ाकर तोड़ लो। हमने यहां कोको का फल तोड़कर खाया। बहुत बड़ा सा कठोर खोल वाला यह फल अंदर से कुछ–कुछ शरीफे जैसा था। इसके बीजों से कॉफी और बाहर के गूदे से कोको मिल्क बनता है, जिसका सौंदर्य प्रसाधनों में भी इस्तेमाल होता है। मार्ग में हमने एक ऊंची जगह पर बने पॉइंट से इडुक्की बांध देखा। पेरियार नदी पर बना इडुक्की बांध केरल में जल विद्युत का सबसे बड़ा स्त्रोत है। थेकड़ी जाने के दो अन्य मार्ग भी थे। जिनमें से एक में बहुत सुंदर झरने थे। हमने इस मार्ग को इसलिए चुना क्योंकि यह सबसे छोटा मार्ग था और यदि 3:30 बजे तक हम थेकड़ी नहीं पहुंचते तो पेरियार टाइगर रिजर्व के अंदर पेरियार झील के बीच में स्थित आईलैंड पर बने होटल 'लेक पैलेस' में नहीं जा पाते। लेक पैलेस में ही हमें रात को रुकना था। लेक पैलेस पहले त्रावणकोर के राजा का ग्रीष्मकालीन आवास था। केरल टूरिज्म एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (केटीडीसी) लेक पैलेस का रखरखाव करता है। पेरियार टाइगर रिजर्व के भीतर मुख्य भूमि पर केटीडीसी के 'अरण्य निवास' और 'पेरियार हाउस' होटल हैं। यहीं से मोटर बोट द्वारा 20 मिनट में लेक पैलेस पहुंचा जाता है। शाम के 4:00 बजे तक ही पेरियार झील में मोटर बोट चलती हैं।

थेकड़ी (तेक्कडी) केरल के इडुक्की जिले के अंतर्गत आता है। थेकड़ी छोटा सा हिल स्टेशन है, जहां पर मानसून और सर्दियों में जाने का अलग ही रोमांच होता है। इसका मुख्य आकर्षण पेरियार राष्ट्रीय उद्यान और वन्य जीव अभ्यारण्य है। इसे पेरियार टाइगर रिजर्व के नाम से भी जाना जाता है। घने वृक्षों और वन्यजीवों से भरपूर यह संरक्षित क्षेत्र कभी राजाओं की शिकारगाह रहा था। यह संरक्षित क्षेत्र 1950 में वन्यजीव अभ्यारण, फिर 1978 में टाइगर रिजर्व, और इसके बाद 1982 राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। इसे 1991 में हाथी परियोजना के अंतर्गत लाया गया। थेकड़ी में दूर तक फैली पहाड़ियाँ और खुशबूदार मसालों के बगीचे हैं। पेरियार नदी केरल की सबसे लंबी व बड़ी नदी है। तमिलनाडु राज्य की पश्चिमी घाट की ऊंचाइयों में इसका उद्गम स्रोत है। यह 244 किलोमीटर लंबी है और वेंबनाड झील, अरब सागर में समाप्त हो जाती है। पेरियार नदी को पुरातन काल में पूर्णा नदी कहते थे। पेरियार नदी मां शारदा का रूपांतरण मानी जाती है। पेरियार नदी पर मद्रास राज्य की सीमा पर केरल के इडुक्की जिले में पश्चिमी घाट की इलायची पहाड़ियों के मध्य 1887 से 1895 के मध्य में मुल्लापेरियार बांध का निर्माण हुआ। इस बांध

के निर्माण से एक कृत्रिम जलाशय का निर्माण हुआ, जिसे पेरियार झील कहते हैं। पेरियार राष्ट्रीय उद्यान इस बांध के जलाशय के चारों ओर स्थित है। मुल्लापेरियार बांध के बनने के बाद यहां के संरक्षित क्षेत्र के स्थानीय वन्य जीवन को जल उपलब्ध कराने के लिए पेरियार झील का निर्माण किया गया। पेरियार झील 24 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैली है। जब बांध का पानी यहां पर छोड़ा गया तो यहां के कीमती वृक्षों को काट लिया गया। नदी में काले ठूंठ के रूप में अभी भी रोजवुड और टीक वुड के कुछ वृक्ष दिखाई देते हैं।

आईलैंड में कई प्रजाति के वृक्ष हैं इसके अतिरिक्त अत्यंत सुंदर फूल वाले छोटे वृक्ष भी हैं। अत्यंत सुंदर फूलों से सजे इस परिसर में इतनी हरियाली होने के बाद भी मच्छर नहीं हैं क्योंकि यहां आसपास के क्षेत्र में मसालों के इतने पौधों हैं कि चारों तरफ उनकी गंध फैली रहती है जिससे मच्छर नहीं आ पाते। चाय, इलायची, काली मिर्च और कॉफी के बगीचे पेरियार टाइगर रिजर्व के आसपास के इलाकों में फैले हुए हैं।

पेरियार टाइगर रिजर्व को देखने के लिए मोटरबोट के माध्यम से ही जाया जाता है। यही पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होता है। सुबह 7:30 बजे से पेरियार टाइगर रिजर्व दिखाने के लिए मोटरबोट सफारी आरम्भ होती है और शाम 3:30 बजे आखिरी बोट जाती है। उसके लौटने के बाद सफारी बंद हो जाती है, शायद इसलिए क्योंकि यह वन्यजीवों का इलाका है, जिसमें शाम के बाद उनके आराम में बाधा पहुंचाने की किसी को अनुमति नहीं होती।

हम जब तक पेरियार टाइगर रिजर्व पहुंचे तब तक आखिरी बोट जा चुकी थी, इसलिए पेरियार टाइगर रिजर्व की सफारी हम नहीं कर पाए। हमें मोटर बोट द्वारा लेक पैलेस पहुंचा दिया गया। यहां रात अत्यधिक अंधियारी होती है क्योंकि दूर–दूर तक कोई रोशनी नहीं होती। शहरों में रात भर जलती एलईडी लाइट्स, चमकते साइन बोर्ड्स, भागती दौड़ती गाड़ियों के शोर और रात को भी दिन बनाता हुआ चकाचौंध उजाला देखते रहने की वर्षों की आदत के बाद, इस घनघोर अंधेरे को देखकर कुछ भय लगा, अतः हम अपने आरामदायक कमरे में बैठ गये, रात का खाना भी वहीं मंगवा लिया। यहां इंटरनेट नहीं आता अतः मोबाइल फोन, टेलीविजन आदि काम नहीं करते।

आकाश में सूर्य की पहली किरण या कहें पौं फटने पर ही हम अपने कमरे से बाहर निकले। वृक्षों से भरी पहाड़ियां, उन पर तैरते बादल, कोहरे की हल्की पर्त, पानी में झुके वन्य जीव, अद्भुत शांति, सूरज के उगने के साथ–साथ आकाश का रंग बदलना, चिड़ियों की चहचहाहट मन को किसी दूसरी दुनिया में ले गयी।

सुबह 7:30 बजे हम मोटर बोट से पेरियार झील में घूमने गए। उससे पहली रात वर्षा हुई थी। इसी समय में ही चक्रवाती तूफान भी भारत के गुजरात तट पर पहुंच चुका था, शायद उसका असर हो। उस दिन हमें बहुत से वन्यजीव दिखाई दिए। हमारे कमरे के बाहर से ही हमने झील के दूसरी ओर भैंसा, गौर, जंगली सूअर, हिरण, हाथी और कई तरह के पक्षी देखे। हाथियों का एक झुंड झील के किनारे घूम रहा था। पेरियार झील और उसकी धाराओं में अनेक प्रजातियों की मछलियाँ पाई जाती है। ऊदबिलाव भी अक्सर दिख जाते हैं। पेरियार झील में वन्यजीव सुबह–सुबह जंगल से निकलकर पानी पीने आते हैं इसलिए सुबह के समय वन्यजीवों के दिखने की अधिक संभावना होती है। यहां के वन्यजीव, जंगल के दृश्य और सुंदर पक्षियों को देखने के लिए बोट सफारी करते समय दूरबीन साथ में हो तो आनंद कुछ और ही हो जाता है। बोट सफारी में हमने देखा बाइसन पशुओं का बहुत बड़ा झुंड जंगल से निकलकर तेजी से एक के पीछे एक भागते हुए पेरियार झील की तरफ आ रहा था। एक तरफ जंगली हाथी घूम रहे थे। हिरण, जंगली सूअर भी झुंड में दिखाई दिए और कई तरह के पक्षी झील के बीच में पेड़ों के ठूंठ पर बैठे हुए दिखे। हमारे

मोटर बोट के ड्राइवर ने बताया कि कई बार तो पर्यटक एक भी वन्यजीव नहीं देख पाते, आप किस्मत वाले हैं कि आपको एक साथ इतने सारे वन्यजीव देखने को मिले। फिर हम लेक पैलेस वापस लौटे। हमने नाश्ता किया और फिर हम मोटर बोट से वापस लौट चले। वापसी में एक मोड़ पर हमने देखा कि दो बड़े हाथी अपनी सूंड से धूल उड़ा रहे थे और आसपास दो छोटे और एक बड़ा हाथी खड़े थे। हमारी मोटर बोट के ड्राइवर ने बताया कि आप ध्यान से देखिए एक बहुत नन्हा सा हाथी का बच्चा लेटा हुआ है, शायद उसने सुबह जन्म लिया होगा या कल रात लिया होगा, उस पर ही दोनों हाथी धूल उड़ा रहे थे और कुछ ही देर में वह बहुत छोटा सा नन्हा सा हाथी उठा और उठ कर चल दिया। और फिर पूरा झुंड अंदर जंगलों की ओर चल पड़ा। हम यह दृश्य देखकर अभिभूत हो उठे। मोटर बोट से उतर कर हम अपनी कार में बैठे और पेरियार टाइगर रिजर्व से होते हुए आगे चल पड़े। पेरियार टाइगर रिजर्व से बाहर निकलते ही कथकली और कलरीपायट्टू के होने वाले प्रदर्शन के बारे में सूचना लिखी दिखाई दी।

थेकड़ी में जीप सफारी और हाथी की सवारी की सविधा भी उपलब्ध है। जिनमें हाथी की सवारी करना, हाथी को खाना खिलाना, हाथी को नहलाना और हाथी की पीठ पर बैठ कर, हाथी की सूंड द्वारा उछाले गये पानी से स्वयं नहाना भी सम्मिलित है। जीप सफारी में तमिलनाडु बॉर्डर, पश्चिमी घाट के जंगल, खेत और केले, नारियल, पपीता, बंदगोभी, और बींस की खेती को देख सकते हैं। अंगूर के बाग में गुच्छों में लटके हुए काले अंगूर दिखाई देते हैं। इमली के भी कई पेड़ हैं। यहां पर पाइप लाइन देख सकते हैं जिनसे पेरियार नदी का पानी तमिलनाडु के कुछ जिलों में और खेतों में भेजा जाता है। थेकड़ी में ईसा से 3 सदी पूर्व की कलरीपायट्टु कला (केरल की मार्शल आर्ट्स) और कथकली जो कि केरल का लोक नृत्य है, के प्रदर्शन के शो भी होते हैं, जिन्हें लोग टिकट लेकर देखते हैं। शो देखने के लिए हमारे पास समय बहुत कम था, हमें निकलने में 12:00 बज चुके थे और 4 घंटे की यात्रा के बाद हमें कुमाराकोम पहुंचना था।

थेकड़ी से कुमारकोम पहुंचने में हमें शाम के 4:00 बजे गए। यहां हम ताज रिजॉर्ट में रुके। थेकड़ी से कुमारकोम जाने में हमें रास्ते में चाय के बागान, पहाड़, जंगल, घाटियां और पहाड़ियों के बीच से उठती धुंध दिखाई दी। इतना सौंदर्य देख कर मन प्रफुल्लित हो गया। सच में प्रकृति से बड़ा चित्रकार कोई और हो ही नही सकता। रास्ते में कई जगह हल्की बारिश मिली। केरल के कोट्टायम से 16 किलोमीटर दूर स्थित कुमारकोम एक सुंदर व प्रमुख पर्यटक स्थल है। कोच्चि हवाई अड्डे से इसकी दूरी 43 किलोमीटर है। यह वेंबनाड झील से निर्मित कई छोटे–छोटे द्वीपों का समूह है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। वेंबनाड झील को केरल के अलग–अलग शहरों में अलग–अलग नामों से पुकारते हैं। यहां धान के खेतों, बैकवॉटर्स व स्वादिष्ट स्थानीय व्यंजन का आनंद लेने के साथ–साथ साहसिक गतिविधियों और विश्राम के लिए लिए लोग आते हैं। यहां फिशिंग, ट्रैकिंग, इत्यादि जल क्रीडाओं के लिए भी लोग आते हैं। यहां के रिसॉर्ट्स में ये सब सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। मानसून का समय पक्षियों को देखने का सबसे अच्छा समय होता है।

कुमारकोम में जल परिदृश्य पक्षी अभयारण्य है जो कि ताज रिजॉर्ट् के निकट स्थित है। वहां पर ₹100 प्रवेश शुल्क देकर प्रवेश किया जा सकता है। हम सुबह जल्दी उठ गए थे। पक्षी अभयारण्य से कुछ पक्षी उड़कर ताज रिसोर्ट के बैकवॉटर्स में भी आ जाते हैं। 6 बजे से ही हल्की हल्की बारिश शुरू हो गई थी। हमने सोचा इस बारिश में तो कोई दिक्कत नहीं होगी और हम पक्षी अभयारण्य के गेट पर पहुंच गये। वहां पर पहुंचते ही बारिश बहुत तेज होने लगी और हमने अपने छाते खोल लिए। एक छाता हम अपने साथ ले गए थे और एक हमें ताज रिजॉर्ट्स से मिला था जो कि बहुत बड़ा था। पक्षी अभयारण्य के गेट पर जो व्यक्ति था उसने कहा आपको पैदल 2 किलोमीटर अंदर जाना होगा वहां पर आपको पक्षी दिखेंगे। फिर 2 किलोमीटर ही वापस लौट कर आना होगा। लेकिन इतनी बारिश में आप वहां कैसे जा पाएंगे। अंदर इतनी संकरी जगह हैं कि

आप छाता लेकर नहीं निकल सकते। पेड़ों की जड़ें और टहनियां इस तरह गुथी हुई हैं कि मार्ग बहुत संकरा है आपको कहीं कहीं तो झुक कर निकलना पड़ेगा। लेकिन हमने हिम्मत की और हम चल पड़े बारिश बहुत तेज हो रही थी और हम प्रार्थना कर रहे थे कि भगवान बारिश रुक जाए तो हम पक्षियों को देख पाएंगे। हम अंदर चले जा रहे थे। रास्ता और संकरा होता जा रहा था। कई बार हमें छाते को बंद करना पड़ा। पेड़ इतने ऊंचे–ऊंचे थे कि ऊपर आकाश भी नहीं दिख रहा था और रास्ते के दोनों तरफ नीचे पानी दिखाई दे रहा था। उसमें कई कछुए हमें तैरते हुए दिखाई दिए। हम चलते जा रहे थे। काफी दूर जाने के बाद हमें पेड़ों के झुरमुट में पानी में खड़ी दो नावें और एक छोटी सी झोपड़ी दिखाई दी। नाव वाले ने हमसे कहा कि इस तरीके से तो आप पक्षियों को नहीं देख पाएंगे। मैं आपको नाव के माध्यम से उस जगह छोडूंगा, जहां से कुछ दूर चलने पर आपको पक्षियों को देखने के लिए बनाए गए मचान मिलेंगे। पहले मचान को छोड़ देना वह बंद है, दूसरे मचान से ही आपको पक्षी दिखाई देंगे उसके बाद एक तीसरा मचान भी है लेकिन पक्षियों के सबसे अच्छे दृश्य दूसरे मचान से ही दिखते हैं। नाव में बैठकर हम पानी के रास्ते चल दिए। यह छोटी सी नाव थी, यह भी एक अलग प्रकार का अनुभव था। नाव वाले ने हमें पानी में झुके कुछ वृक्षों और पक्षियों के नाम बताए। जल में लिली के सुंदर फूल खिले हुए थे। आगे कुछ दूरी पर वैंबनाड़ झील भी दिखाई दे रही थी। कई पक्षी उड़ते हुए भी हमें दिखाई दिए और फिर उसने हमें पेड़ों के झुरमुट में एक जगह नाव रोककर उतरने को कहा। नाव वाले ने कहा आप आराम से कितनी भी देर में वापस आओ मैं आपको यही मिलूंगा। हम चल दिए दूसरे मचान पर ऊपर चढ़कर देखा तो आश्चर्यचकित और मंत्र मुग्ध रह गए। इतने सारे पक्षी, हमारे सामने वृक्षों की सबसे ऊंची टहनियों पर बैठे हुए थे। काले, सफेद रंग के अनेक पक्षी ऐसे बैठे थे, मानो बारिश के बाद निकली धूप सेंक रहे हों। बहुत से पक्षी उड़ रहे थे। कुछ बार– बार उड़ कर बैठते और फिर उड़ जाते। कुछ देर वहां रुक कर हम वापस लौट कर अपनी नाव के पास आ गए। अबकी बार नाव ने हमें ताज रिजॉर्ट्स के काफी नजदीक छोड़ा। इस रास्ते में हमें बहुत बड़े–बड़े हाउसबोट दिखाई दिए। हमारे नाव वाले ने बताया कि कुछ हाउसबोट ताज रिजॉर्ट के भी है। नाव से उतरकर, 3 मिनट का रास्ता तय करके हम अपने रिजॉर्ट के अंदर प्रवेश कर गए। वापस रिजॉर्ट में लौटकर देखा कि टिकट के पीछे लिखा था कि पक्षी अभयारण्य में नाव से जाने आने के लिए कोई भी व्यवस्था नहीं है। कंट्रीबोट्स अपने रिस्क पर ले सकते हैं। ताज रिजॉर्ट्स में रुकने के बाद वहां से बाहर निकलने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती, अंदर इतनी गतिविधियाँ होती हैं कि दिल और दिमाग तरोताजा हो जाता है।

वेंबनाड झील भारत की सबसे लंबी और दूसरी सबसे चौड़ी झील है। इसके किनारे केरल के कोट्टायम, अलेप्पी और एर्नाकुलम जिलों को छूते हैं। इसकी चौड़ाई कुमारकोम में सबसे ज्यादा 14 किलोमीटर है। यह बैकवॉटर झील है। ताज रिसोर्ट से कुछ दूरी पर सॉल्ट वाटर बैरियर दिखाई देते हैं। जो बैकवॉटर के अरब सागर से जुड़े भाग को स्वच्छ जल वाले भाग से अलग करते हैं, इसी भाग को पेरियार एवं पंबा नदी सहित आठ अन्य नदियां अपना जल प्रदान करती हैं। हजारों लोग जीविका के लिए वेंबनाड झील से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हैं, जिनका मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना और खेती है। वैंबनाड झील और उससे सम्बद्ध नहर पर्यटन का मुख्य आकर्षण हैं तथा स्थानीय यातायात का मुख्य साधन भी हैं। झील का पारिस्थितिकी तंत्र स्वच्छ जल और खारे जल के मिश्रण के कारण विशेष तरह का होता है। इसलिए यहां पर भिन्न–भिन्न प्रजातियों की मछलियां पायी हैं जिन्हें लोग चाव से खाते हैं। इस झील में वार्षिक स्नेक बोट रेस और अन्य छोटी नौका दौड़ के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

ताज रिजॉर्ट्स में आवास, भोजन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का यादगार अनुभव साथ लेकर और एक बार पुनः वहां जाने की इच्छा रखते हुए हमने अगले दिन 13 जून को 12:00 बजे कुमारकोम से कोच्चि की वापसी यात्रा आरंभ की। यहां रास्ते में 'हिल पैलेस म्यूजियम' देखा। हिल

पैलेस म्यूजियम में केरल के राजाओं का इतिहास, उनके द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले आभूषण व बग्घियां हथियार, वस्त्र, एवं अन्य सामान संग्रहित किए गए हैं, राजशाही परिवार का इतिहास और उनके चित्र गैलरी में लगे हुए हैं। राजा का एक सोने का मुकुट 1.45 किलोग्राम का है जिस पर हीरे, रूबी और पन्ना जड़ा हुआ है। हिल पैलेस म्यूजियम का परिसर बहुत विशाल था। एक स्थान पर डायनासोर का बहुत बड़ा मॉडल बनाया हुआ था और एक हिरण पार्क भी था जिसमें बहुत से हिरण थे। पर्यटक उन्हें पत्ती खिलाते तो वह जाली वाले बाड़े के पास आ कर खा लेते।

13 जून को 3:00 बजे हम कोच्चि में गेस्ट हाउस में पहुंचे। कोच्चि एर्नाकुलम जिले के अंतर्गत आता है। कुछ देर आराम करके हम मरीन ड्राइव घूमने गए। यहां पैदल ही घूमा जा सकता है। यहां गाड़ियों का प्रवेश वर्जित है। यहां खाने पीने की दुकाने हैं, अनगिनत हाउसबोट, मोटर बोट तट पर खड़ी थीं। एक वाटर मेट्रो का भी स्टेशन था। जिसका टिकट काउंटर शाम के 7:00 बजे बंद हो जाता था। कोच्चि में मरीन ड्राइव पर किनारे खड़ी नावें व मोटरबोट, अरब सागर–पेरियार नदी में यात्रा के लिए ले जाती हैं। अरब सागर और पेरियार नदी में बोटिंग के लिए कोच्चि यात्री नौकायन केंद्र भी उपलब्ध है।

अगले दिन 14 जून को कोच्चि में रुक कर निकटवर्ती स्थलों का भ्रमण किया। हम टैक्सी द्वारा कोच्चि से 13 किलोमीटर दूर फोर्ट कोच्चि देखने गए। फोर्ट कोच्चि और एर्नाकुलम के बीच यात्रा फेरी के माध्यम से भी की जा सकती है। अरब सागर के समानांतर बहती नदियों के उथले मुहानों के समुद्र में मिलने से बंद खाड़ियों का निर्माण होता है, यही बैकवॉटर कहलाते हैं। बैकवॉटर में विविध प्रकार की वनस्पतियां और मछलियां पायी जाती हैं क्योंकि यहां नदी का मीठा पानी, समुद्र के खारे पानी से मिलता है। समुद्र में ज्वार–भाटे के समय समुद्र का पानी अंदर तक आ जाता है।

फोर्ट कोच्चि में हमने वास्कोडिगामा स्क्वायर देखा। यह समुद्र तट पर घूमने फिरने का संकरा सा स्थान है, जहां खाने–पीने की दुकानें हैं और बांस और सागौन के खंभों पर मछुआरों के अनेक विशाल जाल हैं। जिन्हें चाइनीस फिशिंग नेट कहते हैं। इन्हें देखने बहुत अधिक लोग आते हैं। यह मछली पकड़ने की एक प्राचीन तकनीक है। यहीं पर दो प्रसिद्ध चर्च सेंट बेसिलिका चर्च और सेंट फ्रांसिस चर्च हैं। पुर्तगाली अन्वेषण वास्कोडिगामा सन् 1498 में केरल के कालीकट (जिसे अब कोझिकोड कहते हैं) आए थे। वे सन् 1502 में फोर्ट कोच्चि पहुंचे थे। सेंट फ्रांसिस चर्च 1503 में बनाया गया। यह सबसे पुराने यूरोपीय चर्चों में से एक है। इसे भारत में पहला यूरोपीय चर्च माना जाता है। अब यह एक संरक्षित स्मारक है। वास्कोडिगामा मसालों के व्यापार के लिए ही यहां पर आए थे। मसालों के व्यापार के लिए यह स्थान तब भी प्रसिद्ध था और आज भी प्रसिद्ध है। वास्कोडिगामा की सन् 1524 में कोच्चि में ही मृत्यु हुई थी। उन्हें सेंट फ्रांसिस चर्च में दफनाया गया था। लेकिन 14 साल बाद उनके अवशेषों को पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन ले जाया गया।

कोच्चि में हम मटनचेरी गये। यहां हमने मटनचेरी पैलेस संग्रहालय देखा जिसे डच पैलेस भी कहते हैं। इसे पुर्तगालियों ने कोचीन के राजा के लिए एक उपहार के रूप में निर्मित किया था। इसमें केरल की पारंपरिक स्थापत्य कला दिखाई देती है और इसमें कोच्चि के शाही परिवार की कुलदेवी स्थापित हैं। यहां पास में ही डच संग्रहालय है जहां पुर्तगालियों का सामान रखा है। केरल में पहले पुर्तगाली, उसके बाद डच, फिर अंग्रेज आए सभी ने अपनी स्थापत्य कला का प्रभाव छोड़ा। यहां ज्यू लोगों का एक मार्केट है। एक संकरी सड़क ज्यू लोगों के निवास स्थल और उनके प्रार्थना स्थल के लिए जानी जाती है। इस प्रार्थना स्थल में कोई भी मूर्ति या तस्वीर नहीं है। अग्नि का एक दीपक यहां जलता रहता है। यहां एक म्यूजियम भी है जहां पर ज्यू लोगों के उस स्थान पर आने का इतिहास लिखा हुआ है। पास ही में एक दुर्गा माता का मंदिर है लेकिन वहां के अन्य मंदिरों की तरह यह सुबह 5:00 बजे से 9:00 बजे तक ही खुलता है और फिर शाम को कुछ देर के लिए

खुलता है। अतः हम वह नहीं देख पाए क्योंकि हमें सुबह वहां पहुंचने में 10:00 बज गए थे, अतः मंदिर के द्वार बंद हो चुके थे। यहां से हमने केरल की प्रसिद्ध साड़ी, बच्चों के लिए कपड़े और केरल के मैग्नेट वाले स्मृति चिन्ह लिए। फोर्ट कोच्चि में सैंटाक्रूज कैथेड्रल बेसिलिका चर्च है। यह पुर्तगालियों द्वारा निर्मित बहुत पुराना और बहुत सुंदर चर्च है। चर्च, अपनी अद्वितीय सुंदरता और भव्यता, कलात्मकता, प्रसिद्ध इतालवी चित्रकारों के चित्र व ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है।

केरल में हमने सामान खरीदते समय और किसी से कुछ रास्ता पूछने में भाषा की समस्या का सामना किया। यहां के लोग हिंदी और अंग्रेजी के स्थान पर अपनी स्थानीय मलयालम भाषा में बात करते थे। वह हमारी अंग्रेजी और हिंदी नहीं समझ पाते थे। हमारी कार का ड्राइवर वहां का स्थानीय व्यक्ति था, उसे हिंदी और अंग्रेजी आती थी। वह स्थानीय लोगों से वार्तालाप करके हमें समझा देता था। हमने सोचा एक भाषा तो ऐसी संपर्क भाषा होनी चाहिए जो सभी देशवासियों को आती हो जिससे हम अपना काम चला सके और कहीं पर भी कुछ भी समझ सके और समझा सके और वह भाषा हिंदी ही हो सकती है। हिंदी के सामान्य और संक्षिप्त ज्ञान से भी लोग आपस में वार्तालाप कर सकते हैं।

कोच्चि में अरब सागर से घिरा मंगलवनम पक्षी अभयारण्य मैंग्रोव वनों के लिए प्रसिद्ध है। यहां अत्यंत घने वृक्ष हैं, उथली झील है, जो कि एक नहर द्वारा कोच्चि के बैकवॉटर से सम्बद्ध है। यहां प्रवासी पक्षी आते हैं।

वाइपिन बीच, कोच्चि में वाइपिन आईलैंड पर स्थित है। यह आइलैंड मुख्य भूमि से एक पुल के माध्यम से जुड़ा है। वाइपिन तट पर सुंदर सुनहरी रेत, अरब सागर का नीला जल, शोर करती हुई तेज गति से आती लहरें, पाम के वृक्ष अत्यंत सुंदर लगते हैं। हमारे ड्राइवर ने एक छोटे से कच्चे मार्ग द्वारा हमें सागर तट तक पहुंचाया हालांकि वहां तक जाते हुए हमने मछलियों का एक बड़ा मार्केट देखा, जहां इसी सागर तट से पकड़ी गई मछलियां बेची जा रही थीं। वाइपिन सागर तट तक पहुंचने के लिए जो छोटा सा कच्चा मार्ग था उसमें सुबह हुई बारिश से बहुत पानी भर गया था। पास में ही एक छोटी सी नाव लिए एक व्यक्ति था। उसने अपनी नाव से हमें सागर तट तक पहुंचाया। यहां बहुत कम लोग थे। लहरें काफी तेज आ रही थीं लेकिन तट कुछ ऊंचा था अतः ऊपर चढ़ने में वह धीमी होकर वापस लौट जाती थीं।

कोच्चि पत्तन (कोच्चि पोर्ट) भारत का सबसे बड़ा शिपयार्ड है। इस बंदरगाह पर जहाजों का निर्माण व रखरखाव किया जाता है। यहां स्थित अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल दूर से ही देखे जा सकते हैं। यहां भारतीय तटरक्षक बल का मुख्यालय है और भारतीय नौसेना की दक्षिणी कमान स्थापित है।

केरल का मुख्य भोजन चावल और चावल से बने व्यंजन हैं। भोजन मुख्यतः नारियल के तेल में पकाया जाता है। चावल के आटे का इडियप्पम और कडला करी जो कि काले चने और कच्चे नारियल की सब्जी होती है यहां का प्रसिद्ध भोजन है। एक तरह के पापड़ जिसे अप्पम कहते हैं, वह भोजन के साथ दिया जाता है।

कोच्चि घूमते हुए शाम हो चली थी इसलिए हम एयरपोर्ट के लिए चल दिए। रास्ते में जाते हुए हमने केरल के प्रसिद्ध केले के चिप्स खरीदे। एयरपोर्ट पर सजे हुए तीन हाथियों की विशाल मूर्तियों के सामने हमने फोटो खींची। केरल के प्रसिद्ध नृत्य कथकली की झांकी भी एयरपोर्ट पर एक तरफ सजी हुई थी। इसके बाद रात को 7:00 बजे की फ्लाइट से केरल की मनमोहक यादों को मन में संजोकर रात 10:00 बजे दिल्ली वापस आ गए।